RNI 26281/74 रजि.नं. पी.बी./जे.एल.-011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 40 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 20 दिसम्बर, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक :40, 17-20 दिसम्बर 2020 तदनुसार 6 पौष, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अमर बलिदानी- स्वामी श्रद्धानंद

ले. -श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब- जालन्धर

भारत में अनेक दिव्य पुरूषों ने जन्म लिया । किसी ने धर्म के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग किया, किसी ने देश के लिए, किसी ने जाति के लिए अपना जीवन लगा दिया। परन्तु देश, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, राष्ट्रीय शिक्षा आदि समग्र क्षेत्रों में संतुलित एवं सर्वाग्रणी किसी का स्वरूप है तो वह अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का है। वह धार्मिक नेता थे और राष्ट्र नेता भी। वह सामाजिक नेता थे और आध्यात्मिक नेता भी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जिस गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को स्थापित किया था उससे पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का खोखलापन प्रकट हो गया था और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को जन्म दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक पूर्ण नेता थे। सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रतीक थे। उनके समकालीन नेता एकदेशी थे, उनमें समग्र गुण नहीं थे। वीरता अदम्य उत्साह, बलिदान उनके रोम-रोम में व्याप्त थे। निर्भयता की भावना, वाणी में अपूर्व ओज, दीन दुखियों के प्रति दया की भावना स्वामी श्रद्धानन्द में सदा दृष्टिगोचर होती थी।

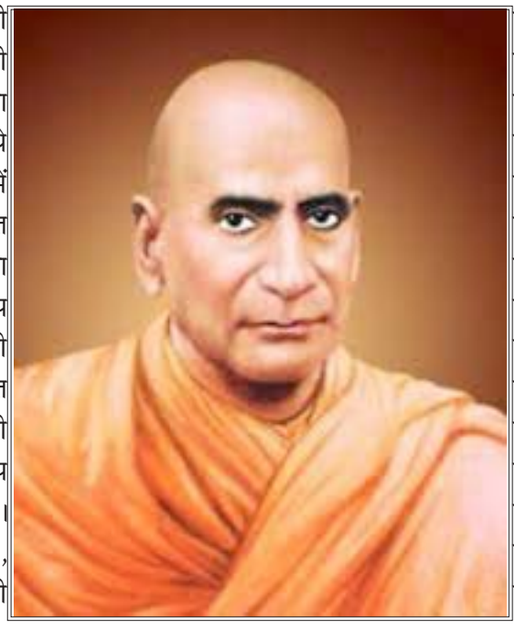

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ब्रिटिश शासन काल में दिल्ली के चांदनी चौक में क्रूर अंग्रेजी शासक के सैनिकों की संगीनों के सामने अपनी छाती दिखाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने आपको बलि के रूप में प्रस्तुत करके देश के प्रति जनता में बलिदान करने की भावना जागृत की। साहस एवं निर्भीकता का ऐसा उदाहारण अपूर्व था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महात्मा थे, ऋषि थे, तपस्वी थे और योगी थे। उन्होंने देश का भविष्य देखा। तत्कालीन नेताओं की तुष्टिकरण की नीति और ब्रिटिश शासन की कूटनीति को अन्तर्दृष्टि से देखा। भारत की राष्ट्रीयता का भविष्य खण्डित प्रतीत हुआ तो भारत में एक राष्ट्रीयता के संगठन के लिए एक जाति, एक धर्म, एक भाषा के प्रचार के लिए शुद्धि आन्दोलन एवं शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया। सम्प्रदायवाद से भारत में देशद्रोही और गद्दार व्यक्तियों का बहुल होने के कारण भारत अखण्ड़त नहीं रह सकेगा, इसीलिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के रक्षार्थ उन्होंने शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया था। यदि देश के अन्य नेता भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का साथ देते तो भारत का विभाजन नहीं होता। महात्मा गांधी जी यद्यपि बहुत वर्षों बाद कुछ समझे परन्तु उनमें शुद्धि कार्य का साहस उत्पन्न नहीं हुआ, तथापि उन्होंने हरिजन उद्धार आन्दोलन शुरू किया।

भारत की राष्ट्रीय भावना की रक्षा के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने एक धर्म, एक भाषा, एक जाति, ऊंच नीच भाव, गरीब अमीर भेद शून्य समभाव की जो महती रूपरेखा प्रसारित की थी उसी को विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि कार्य के द्वारा क्रियान्वित किया था। आज उसी आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर चलाना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान शुद्धि कार्य के कारण हुआ। यह राष्ट्र कार्य के लिए बलिदान था और धर्म कार्य के लिए भी था। अत: यह बलिदान इतिहास में अपूर्व था। इसलिए धार्मिक एवं राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम अमर रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने राष्ट्रीयता के निर्माण के लिए स्वधर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राचीनमय इतिहास की रक्षा एवं प्रचार के लिए भारतीयों को सच्चे अर्थों में भारतीय बनाने के लिए तथा जन्म जातिगत भेदभाव गरीब और अमीर का भेदभाव मिटाकर सबको समान स्तर पर लाने के लिए जिस आदर्श गुरूकुल को जन्म दिया था, उसने मैकाले की शिक्षा पद्धति का प्रखरता से बिना शासन से सहायता लिए प्रबल सामना किया।

हर वर्ष 23 दिसम्बर आर्य जगत् को उस महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान स्मरण करवाता है जिसने अपने धर्म, संस्कृति और देश के लिए अपना बलिदान दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश, धर्म और जाति के लिए अपना बलिदान दिया था। उन्होंने अपने हित को त्यागकर राष्ट्रहित को अपनाया। मुन्शीराम से महात्मा मुन्शीराम और महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द तक का उनका सफर बहुत ही प्रेरणादायक है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके आदर्शों, उनके कार्यों को अपने जीवन में अपनाएंगे। आज राष्ट्र को फिर से स्वामी श्रद्धानन्द जैसे ओजस्वी, तेजस्वी और निर्भीक संन्यासी की आवश्यकता है। ऐसे वीर, ओजस्वी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हम भी उनके जीवन से प्रेरणा लें। उस महामानव के मानवता के लिए पथ प्रदर्शक कार्यों को आगे बढ़ाएं तथा उनका बलिदान दिवस मनाना सार्थक हो सकता है।

स्वराज्य, स्वधर्म व स्वाभिमान हेतु बलिदानी महात्मा स्वामी श्रद्धानंद

ले.-विनोद बंसल, नई दिल्ली

एडवोकेट मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद तक जीवन यात्रा विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए बेहद प्रेरणादायी है। स्वामी श्रद्धानंद उन बिरले महापुरुषों में से एक थे जिनका जन्म ऊंचे कुल में हुआ किन्तु बुरी लतों के कारण प्रारंभिक जीवन बहुत ही निकृष्ट किस्म का था। स्वामी दयानंद सरस्वती से हुई एक भेंट और पत्नी के पतिव्रत धर्म तथा निश्छल निष्कपट प्रेम व सेवा भाव ने उनके जीवन को क्या से क्या बना दिया। काशी विश्वनाथ मंदिर के कपाट सिर्फ रीवा की रानी के लिए खोलने और साधारण जनता के लिए बंद किए जाने व एक पादरी के व्याभिचार का दृश्य देख मुंशीराम का धर्म से विश्वास उठ गया और वह बुरी संगत में पड़ गए।

किन्तु, स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ बरेली में हुए सत्संग ने ना सिर्फ उन्हें जीवन का अनमोल आनंद दिया अपितु उन्होंने उसे सम्पूर्ण संसार को खुले मन से भी वितरित किया। समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन का अवलोकन करें तो पाते हैं कि प्रबल विरोध के बावजूद, उन्होंने, स्त्री शिक्षा के लिए अग्रणी भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरी विद्यालय में पढ़ने वाली स्वयं की बेटी अमृत कला को जब उन्होंने 'ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया गाते हुए सुना तो वे हतप्रभ रह गए। वैदिक संस्कारों की पुनर्स्थापना हेतु उन्होंने घर-घर जाकर चंदा इकट्ठा कर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना हरिद्वार में करके अपने बेटे हरिशचंद्र और इंद्र को सबसे पहले भर्ती करवाया।'

स्वामी जी मानते थे कि जिस समाज और देश में शिक्षक स्वयं चरित्रवान नहीं होते उसकी दशा अच्छी हो ही नहीं सकती। उनका कहना था कि हमारे यहां टीचर हैं, प्रोफ़ेसर हैं, प्रिसिंपल हैं, उस्ताद हैं, मौलवी हैं पर आचार्य नहीं हैं। आचार्य अर्थात् आचारवान व्यक्ति की महती आवश्यकता है। चरित्रवान व्यक्तियों के अभाव में महान से महान व धनवान से धनवान राष्ट्र भी समाप्त हो जाते हैं।

जात-पात व ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाकर समग्र समाज के कल्याण के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए। अंग्रेजी में एक कहावत है कि चेरिटी बीगिन्स एट होम। अर्थात् शुभकार्य का प्रारम्भ स्वयं से करें। प्रबल सामाजिक विरोधों के बावजूद अपनी बेटी अमृत कला, बेटे हरिशचद्र व इंद्र का विवाह जात-पात के समस्त बंधनों को तोड़ कर कराया। उनका विचार था कि छुआछूत ने इस देश में अनेक जटिलताओं को जन्म दिया है तथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के द्वारा ही इसका अंत कर अछूतोद्धार संभव है।

वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि के रूप में अपनाने के पक्षधर थे। सतधर्म प्रचारक नामक पत्र उन दिनों उर्दू में छपता था। एक दिन अचानक ग्राहकों के पास जब यह पत्र हिंदी में पहुंचा तो सभी दंग रह गए क्योंकि उन दिनों उर्दू का ही चलन था। त्याग व अटूट संकल्प के धनी स्वामी श्रद्धानन्द ने 1898 में यह घोषणा की कि जब तक गुरुकुल के लिए 30 हजार रुपए इकट्ठे नहीं हो जाते तब तक वह घर में पैर नहीं रखेंगे। इसके बाद उन्होंने भिक्षा की झोली डाल कर न सिर्फ़ घर-घर घूम 40 हजार रुपये इकट्ठे किए बल्कि वहीं डेरा डाल कर अपना पूरा पुस्तकालय, प्रिंटिंग प्रेस और जालंधर स्थित कोठी भी गुरुकुल पर न्यौछावर कर दी।

उनका अटूट प्रेम व सेवा भाव भी अविस्मरणीय है। गुरुकुल में एक ब्रह्मचारी के रुग्ण होने पर जब उसने उल्टी की इच्छा जताई तब स्वामी जी द्वारा स्वयं की हथेली में उल्टियों को लेते देख सभी हत्प्रभ रह गए। ऐसी सेवा और सहानुभूति और कहां मिलेगी? स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन के कारण धर्मांतरण कर बिछुड़े स्वजनों की शुद्धि करना देश को मजबूत करने के लिए परम आवश्यक है। इसीलिए, स्वामी जी ने भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना कर दो लाख से अधिक मलकानों को शुद्ध किया। परावर्तन के अनेक कीर्तिमान बनाने के बावजूद एक बार शुद्धि सभा के प्रधान को उन्होंने पत्र लिख कर कहा कि 'अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करूं। मुझे लगता है कि उनके शुद्धि आंदोलन के परिणाम स्वरूप ही आज दिल्ली भारत में हैं। अन्यथा, उस समय दिल्ली के आसपास बढ़ी मुस्लिम जनसंख्या के कारण विभाजन के बाद दिल्ली भी पाकिस्तान के हिस्से में चली जाती।

महर्षि दयानंद ने राष्ट्र सेवा का मूलमंत्र लेकर आर्य समाज की स्थापना की। कहा कि 'हमें और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। स्वामी श्रद्धानन्द ने इसी को अपने जीवन का मूलाधार बनाया।

वे एक निराले वीर थे। इसी कारण लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था 'स्वामी श्रद्धानन्द की याद आते ही 1919 का दृश्य आंखों के आगे आ जाता है। सिपाही फ़ायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोल कर आगे आते हैं और कहते हैं-'लो, चलाओ गोलियां।' इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं होगा? 'महात्मा गांधी के अनुसार' वह वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग शैय्या पर नहीं, परंतु रणांगण में मरना पसंद करते हैं। वह वीर के समान जीये तथा वीर के समान मरे।'

अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए रंग भेद के विरुद्ध सत्याग्रह कर रहे गांधी जी को आर्थिक सहयोग करने की अपनी इच्छा जब स्वामी जी ने अपने गुरुकुल के शिष्यों के समक्ष रखी तो उनमें से कुछ वरिष्ठ शिष्यों ने हरिद्वार के पास ही बन रहे दूधिया बांध में कुछ दिन मजदूरी कर कमाए लगभग 2000 रुपए एकत्र कर गांधी जी को भेजे। इस सहयोग से अभिभूत गांधी जी ने भारत लौटने पर गुरुकुल काँगड़ी में स्वामी जी से भेंट की। गुरुकुल की शिक्षा पद्धति से प्रसन्न गांधी जी ने अपने बेटों को कुछ दिन गुरुकुल में ही रखा। स्वामी श्रद्धानंद ने ही एक मान पत्र के माध्यम से गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि से पहली बार संबोधित किया था।

वे चाहते थे कि राष्ट्र धर्म को बढ़ाने के लिए, प्रत्येक नगर में एक 'हिंदू-राष्ट्र मंदिर' होना चाहिए जिसमें 25 हजार व्यक्ति एक साथ बैठ सकें। वहां वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, महाभारत आदि का पाठ हुआ करे। मंदिरों में अखाड़े भी हों जहां, व्यायाम के द्वारा शारीरिक शक्ति भी बढ़ाई जाए। प्रत्येक हिन्दू राष्ट्र मंदिर पर गायत्री मंत्र भी अंकित हो। देश की अनेक समस्याओं तथा हिंदोद्धार हेतु उनकी एक पुस्तक 'हिंदू सॉलिडेरिटी-सेवियर ओफ़ डाइंग रेस' अर्थात् 'हिंदू संगठन-मरणोन्मुख जाति का रक्षक' तथा उनकी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं। संस्कारी शिक्षा, नारी स्वाभिमान, शुद्धि आंदोलन, राजनीतिक व सामाजिक सुधार, स्वराज्य आंदोलन, अछूतोद्धार, वेद उपनिषद व याज्ञिक कार्यों का विस्तार इत्यादि के क्षेत्र में उनका योगदान सदियों तक विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

राजनीतिज्ञों के बारे में स्वामी जी का मत था कि भारत को सेवकों की आवश्यकता है लीडरों की नहीं। शुद्धि आंदोलन से विचलित एक धर्मांध अब्दुल रशीद नामक इस्लामिक जिहादी ने 23 दिसंबर 1926 को चाँदनी चौक दिल्ली के दीवान हॉल स्थित कार्यालय में रुग्ण शैया पर लेटे स्वामी जी को धोखे से गोलियों से लहू-लुहान कर चिरनिद्रा में सुला दिया। वे आज सशरीर भले हमारे बीच ना हों किन्तु, उनका व्यक्तित्व, कृतित्व व शिक्षाएं मानव-जाति का सदैव कल्याण करती रहेंगीं। भगवान श्री राम का कार्य इसीलिए सफ़ल हुआ क्योंकि उन्हें हनुमान जैसा सेवक मिला। स्वामी श्रद्धानंद भी सच्चे अर्थों में स्वामी दयानन्द के हनुमान थे जो निस्वार्थ भाव से राष्ट्र-धर्म की सेवा के लिए तिल-तिल कर जले।

सम्पादकीय

आर्य जगत् के प्रेरणास्रोत- स्वामी श्रद्धानंद

जब भारत में विदेशी शासन की जड़ें हिलने लगी थी, जब प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी सेनानी तात्यां टोपे, महर्षि दयानन्द आदि अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई भारत मां के माथे पर स्वतन्त्रता का ताज रखने की तैयारियां कर रहे थे उसी पावन एवं क्रान्तिकारी वेला में सन् 1856 में जालन्धर के तलवन ग्राम में लाला नानक चन्द के घर स्वामी श्रद्धानन्द (मुन्शीराम) का जन्म हुआ था। मुंशीराम के पिता पुलिस के उच्च अधिकारी थे। बालक मुंशीराम की शिक्षा बनारस से प्रारम्भ हुई, जहां पर उनके पिता लाला नानक चन्द इंस्पेक्टर जनरल पुलिस थे। फिर मुंशीराम ने लाहौर से वकालत की परीक्षा पास की। मुन्शीराम का विवाह जालन्धर के रईस राय सालिगराम की पुत्री शिवदेवी के साथ हुआ। उस समय उनके पिता का स्थानान्तरण बरेली हो गया। इन दिनों में मुन्शीराम के चरित्र में दोष आ गया। वे बेलगाम घोड़े की तरह मद्यपान और वेश्याओं के नाच रंग में तल्लीन हो रहे थे और धर्म तथा ईश्वर की सत्ता मानने से भी इन्कार करने लगे थे। बनारस में एक दिन वे काशी विश्वनाथ के मन्दिर में गए। वहां उन्हें प्रविष्ट होने से रोका गया और बताया गया कि एक रानी साहिबा भगवान विश्वनाथ के दर्शन करने मन्दिर में गई हुई हैं। उनके बाहर आने के बाद ही किसी अन्य दर्शनार्थी को मन्दिर में जाने दिया जाएगा। युवा मुन्शीराम के मन पर चोट लगी कि भगवान के मन्दिर में भी राजा और रंक में भेद है। इससे उनके अन्दर नास्तिकता के भाव पैदा होने लगे। इसके पश्चात वे ईसाई मत की ओर आकर्षित हुए परन्तु वहां पर भी उन्होंने ऐसे घृणित दृश्य देखें कि उन्हें ईसाई मत से भी घृणा हो गई। मुन्शीराम उन दिनों मांस, शराब और नास्तिकता के शिकार हो चुके थे।

कुछ दिनों पश्चात बरेली में महर्षि दयानन्द का पदार्पण हुआ। बरेली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों का प्रबन्ध करने के लिए सरकारी आज्ञा हुई तथा लाला नानक चन्द जी को नियुक्त किया गया। सभा के प्रबन्धक के रूप में लाला नानक चन्द जी महर्षि के व्याख्यानों से प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा कि अपने नास्तिक पुत्र को सत्संग में लाना चाहिए। नानक चन्द जी ने अपने पुत्र मुन्शीराम को कहा कि मेरे साथ सत्संग में जाना है। मुन्शीराम बोला, पिताजी यह संस्कृत जानने वाला साधु मेरे तर्कों का उत्तर दे सकता है? उनके पिता ने कहा- बेटा चलने में क्या हर्ज है। यदि उनकी बात समझ में न आए तो मत मानना। इसके पश्चात मुन्शीराम प्रथम बार महर्षि दयानन्द का भाषण सुनने गए। जब महर्षि दयानन्द पर उनकी दृष्टि पड़ी तो अत्यन्त तेजोमय मुखमण्डल ब्रह्मचर्य की आभा से ओतप्रोत सुड़ौल शरीर को देखा और वाणी का पाण्डित्यपूर्ण उच्चारण तथा श्रोताओं में बरेली में बड़े-बड़े उच्च अंग्रेज अधिकारियों को देखा तो मुन्शीराम प्रथम साक्षात्कार में ही प्रभावित हो गया। भाषण के पश्चात महर्षि के चरणों में उपस्थित होकर कहा कि क्या मेरी शंकाओं का समाधान भी किया जाएगा। स्वामी जी ने प्रसन्नतापूर्वक उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। मुन्शीराम ने ईश्वर की सत्ता पर तीखे प्रहार किए परन्तु स्वामी जी ने बड़े प्रेम से उत्तर दिए। थोड़े समय के पश्चात मुन्शीराम अवाक् होकर बोले महाराज आपने मेरी जबान तो बन्द कर दी किन्तु हृदय में विश्वास नहीं होता कि इस ब्रह्माण्ड को बनाने वाली कोई शक्ति सम्पन्न सत्ता है। महर्षि दयानन्द बोले जब ईश्वर की कृपा होगी तो यह विश्वास भी हो जाएगा।

इन शब्दों ने मुन्शीराम के ऊपर जादू का असर किया और वे प्रतिदिन श्री महाराज के चरणों में उपस्थित होकर अपने आपको निहाल करते रहे। यही वह घटना थी जिसने मुन्शीराम के मानस पटल को बदल दिया और धर्म परायण धर्मपत्नी शिवदेवी की प्रेरणा और अन्य घटनाओं से मांस और शराब छूट गई। वकालत करते हुए उनकी गणना उस समय प्रसिद्ध वकीलों में होती थी। वे झूठे मुकद्मे की पैरवी नहीं करते थे। मुन्शीराम के ऊपर जब आर्य समाज का रंग चढ़ गया तो उन्होंने वकालत छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को अपने योगदान से देश भर में अग्रगण्य संस्थाओं में लाकर खड़ा कर दिया। उस समय उनके सामने ऐसे विद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन था जिससे अंग्रेजी सत्ता के चंगुल से भारतीय विद्यार्थी बचाए जा सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की और अंग्रेजी राज्यकाल में यह प्रथम विद्यालय था जिसमें शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया। कल्याण मार्ग के पथिक महात्मा मुन्शीराम ने सर्वात्मना त्याग भावना से प्रेरित होकर अपनी जालन्धर वाली कोठी व सब सम्पत्ति आर्य समाज को दान कर दी। परमात्मा में उनकी असीम श्रद्धा थी इसलिए उन्होंने संन्यास के पश्चात अपना नाम श्रद्धानन्द रखवाया।

गुरूकुल कांगड़ी का प्रबन्ध आचार्य रामदेव को सौंप कर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज दिल्ली में पधारे और यहां से उनकी राजनैतिक और धार्मिक गतिविधियों का प्रारम्भ हुआ। सन् 1922 में जब सिक्खों ने गुरू के बाग का सत्याग्रह प्रारम्भ किया और अंग्रेजी सरकार उस आन्दोलन को दबाने की तैयारी करने लगी तो इस समाचार को सुनकर स्वामी श्रद्धानन्द जी तुरन्त अमृतसर पहुंच गए और सत्याग्रह का संचालन उन्होंने स्वयं अपने हाथ में लिया। वीर सन्यासी ने गुरू का बाग सत्याग्रह के प्रथम जत्थे के प्रथम सत्याग्रही के रूप में अपने को प्रस्तुत किया और वे अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में स्वामी जी ने सक्रिय भाग लिया और उस समय के देश के अग्रिम नेताओं में दिखाई दिए। अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुई क्रूर घटना को देखकर पंजाब की भूमि प्रकम्पित हो उठी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस का नाम लेने वाला भी पंजाब में दिखाई नहीं देता था। तब स्वामी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में बुलाने का प्रस्ताव किया और स्वयं उनके स्वागताध्यक्ष बनें। कांग्रेस के इतिहास में सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा। 1919 में जब दिल्ली में कांग्रेस की सभाएं और जलूस बन्द करने का आदेश दिया गया तो उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा जलूस निकाला गया। चांदनी चौक पर जलूस को रोककर चेतावनी दी गई कि पीछे हट जाओ नहीं तो गोली चला दी जाएगी। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गोरों की संगीनों के सामने अपना सीना तानकर कहा कि हिम्मत है तो पहले गोली मुझ पर चलाओ बाद में सत्याग्रहियों पर चलाना। स्वामी जी की निर्भीकता को देखकर जवानों को संगीने हटा लेने का आदेश दिया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। इसलिए मुसलमानों ने जामा मस्जिद के मैम्बर पर खड़े होकर उपदेश करने की प्रार्थना की। इस्लाम के इतिहास में यह पहली घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार का सम्मान दिया गया हो। कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और खुले रूप से भारतीयकरण का कार्य अपने हाथ में लिया। सर्वप्रथम उन्होंने आगरा के मलकाने राजपूतों को स्वधर्म में वापस लेकर इस महान् आन्दोलन का सूत्रपात किया। स्वामी श्रद्धानन्द के इस कार्य से कुछ साम्प्रदायिक लोग उनसे नाराज हो गए और 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध साम्प्रदायिक अब्दुल शसीद ने गोली मारकर हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जीवन पर्यन्त देश, धर्म और जाति के लिए सर्वस्व बलिदान किया और अन्तिम क्षणों में अपना भौतिक शरीर भी राष्ट्र को अर्पण कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा किए गए मानवता के तथा राष्ट्रहित के कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

''ईश्वर, वेद और ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द''

ले.-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्यसमाज के इतिहास में ऋषि दयानन्द के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रमुख स्थान है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बरेली में ऋषि दयानन्द जी के दर्शन किये थे और और उनके उद्देश्यों व कार्यों को यथार्थ रूप में जाना व समझा था। उन्होंने मन वचन व कर्म से उनके कार्यों को पूरा करने के लिये यथासम्भव कार्य किया। उनके जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनका एक महत्तम कार्य प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति की देन गुरुकुल पद्धति को पुनर्जीवित करना था। इसके लिए उन्होंने हरिद्वार के कांगड़ी ग्राम में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। यह कार्य कितना कठिन व जटिल था, इसका अनुमान भी हम नहीं लगा सकते। प्रथम कार्य तो गुरुकुल के लिये बृहद भूभाग की व्यवस्था सहित वहां भवनों के निर्माण के लिये धन संग्रह करना था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कार्य को जिस उत्साह, श्रद्धा तथा त्यागपूर्वक किया वह प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक है। इतिहास में इस प्रकार के उदाहरण मिलना कठिन है। गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की स्थापना सन् 1902 में की गई। बहुत तीव्रता से गुरुकुल ने प्रगति की और यह देश का शिक्षा का एक आदर्श राष्ट्रीय संस्थान बना। इसकी कीर्ति व यश का अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि इसकी सुगन्ध को इग्लैण्ड में बैठे लोगों ने भी अनुभव किया था और वहां ब्रिटिश राजनेता जेम्स रैमसे मैकडोनाल्ड (1866-1937) के नेतृत्व में कुछ प्रतिनिधि गुरुकुल कांगड़ी को देखने हरिद्वार पधारे थे। श्री रैमसे मैकडोनाल्ड बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने थे। अपनी गुरुकुल की यात्रा में उन्होंने लिखा था कि यदि किसी को जीवित ईसामसीह के दर्शन करने हों तो उसे स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन करने चाहिये। न केवल रैमसे मैकडोनाल्ड अपितु उन दिनों के वायसराय चेल्म्सफोर्ड भी गुरुकुल कांगड़ी में आये थे। उन्होंने गुरुकुल को देखा था और जाते हुए गुरुकुल को सरकारी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव भी किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक कारणों से वायसराय जी की ओर से गुरुकुल को प्रस्तावित आर्थिक सहायता को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया था। इस घटना से यह अनुमान लगता है कि उन दिनों के हमारे पूर्वज तप, त्याग, पुरुषार्थ में विश्वास रखते थे और सुविधाभोगी नहीं थे अन्यथा आज हम इस प्रकार के प्रस्ताव को ठुकराने की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज का गुरुकुल स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव के स्वप्नों का गुरुकुल नहीं है। गुरुकुल का उद्देश्य वेद, वैदिक धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के साथ वेद का देश-देशान्तर में प्रचार करना है। आज यह उद्देश्य किस सीमा तक पूरा हो रहा है, सभी आर्यजन इससे भली भांति परिचित हैं। अतीत में गुरुकुल ने हमें अनेक वैदिक विद्वान, वेद भाष्यकार, पत्रकार, शिक्षा शास्त्री, देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी, समाज सुधारक, शिक्षक, राजनेता, व्यवसायी आदि दिये हैं। देश की स्वतन्त्रता के बाद हम प्रायः सभी क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखते हैं। यही स्थिति आर्यसमाज और स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रिय गुरुकुल की भी हुई है। आज स्थिति यह है कि आर्यसमाज व देश में स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान योग्य, त्यागी, तपस्वी व समर्पित विद्वान व नेता नहीं है जिसके लिये ईश्वर, वेद और आर्यसमाज से बढ़कर कुछ न हो तथा वह वेद और ऋषि दयानन्द के उद्देश्यानुसार 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वात्मा उच्च योग्यता को धारण किये होकर संघर्षरत हो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद और आर्यसमाज की आध्यात्मिक एवं समाज सुधार की विचारधारा का सर्वाधिक प्रचार किया। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे। यह सभा आर्यसमाज की सबसे अधिक प्रभावशाली एवं गतिशील संस्था थी। आपने समाज सुधार के सभी कार्यों को पूरी लगन एवं संगठित रूप से किया। अपने जीवन काल में अनेक गुरुकुलों को स्थापित किया। ब्रह्मचारियों को वेदाध्ययन एवं वेदप्रचार की प्रेरणा दी। आपका अपना जीवन भी वेद प्रचार का जीवन्त उदाहरण था जिससे लोग प्रेरणा लेते थे। आप समाज में दलित समस्या से पूर्णतः परिचित थे। जन्मना-जातिवाद की बीमारी के दुष्प्रभावों से भी आप परिचित थे। आपने जन्मना जातिवाद, भेदभाव व छुआछूत के उन्मूलन के लिये भी कार्य किया। डा. अम्बेडकर भी स्वामी जी के जाति सुधार एवं दलितोद्धार के कार्यों के प्रशंसक थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने ''सद्धर्म प्रचारक'' नामक उर्दू पत्र का प्रकाशन किया था। बाद में राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी की महत्ता से परिचित होने पर आपने घाटा उठाकर भी इसे हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। एक प्रकार से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पंजाब के उर्दू भाषी हिन्दुओं को देश की एकता का आधार हिन्दी भाषा पढ़ाई थी। आपका प्रेस लाखों रुपये मूल्य का था जिसे आपने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब को दान कर दिया था। आप देश के प्रेरणादायक सर्वस्व दानी धर्मप्रचारक व सामाजिक नेता थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी जिन दिनों जालंधर में वकालत करते थे, उन दिनों आपकी वकालत खूब चलती थी। आर्यसमाज से प्रेम व धर्म प्रचार के कार्यों की आवश्यकता का विचार कर आपने अपनी वकालत की कमाई पर लात मारकर वेद प्रचार के कार्य को अपनाया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिस त्याग भावना का परिचय दिया, ऐसे लोग कम ही हुए हैं। आपकी जालन्धर में एक बड़ी कोठी थी। इस पर आपके बच्चों का उत्तराधिकार था। आपके दो पुत्र हरिश व इन्द्र तथा तीन पुत्रियां थी। इस सम्पत्ति के मोह पर भी आपने विजय पाई थी और अपने पुत्रों को सहमत कर अपनी जालन्धर की इस कोठी को भी गुरुकुल कांगड़ी को दान देकर 'सर्वमेध यज्ञ' किया था। ऐसे महान चरित्र के धनी पूर्वजों के होते हुए हम आर्यसमाज में जब पदों के लिये लोगों को गुटबाजी व अधर्माचरण करते हुए देखते हैं तो हमें दुःख होता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इन कार्यों को करते हुए ''शुद्धि'' का कार्य भी किया। शुद्धि का अर्थ है कि अपने जो धर्म-बन्धु भय, प्रलोभन, छल व अज्ञान से विधर्मियों द्वारा बलात् विधर्मी बना लिये गये होते हैं, उन्हें वैदिक धर्म की श्रेष्ठता व ज्येष्ठता समझाकर पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में प्रविष्ट कराना। यह कार्य विधर्मियों के अतीत के अनैतिक कार्यों का निवारण होता है। ऋषि दयानन्द ने वेद की 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' आदेश के अनुसार इसकी प्रेरणा की थी। यदि शुद्धि का कार्य न किया जाये तो हमारे विभिन्न मतों के बन्धु सत्य मत व सद्धर्म से परिचित न होने के कारण अभ्युदय एवं निःश्रेयस को प्राप्त करने सहित धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष एवं अपनी कामनाओं को सिद्ध नहीं कर सकते। आर्यसमाज ही विश्व का ऐसा एकमात्र संगठन है जो विश्व को सच्चे ईश्वर व आत्मा का स्वरूप बताने के साथ ईश्वर की सच्ची उपासना करना सिखाता है जिससे मनुष्य ईश्वर का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार कर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ईश्वर, वेद और ऋषि की भावनाओं को समझकर इनका प्रचार किया था और इसमें अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। यदि यह कार्य स्वामी श्रद्धानन्द की भावनाओं के अनुरूप जारी रखा जाता तो शायद पाकिस्तान का निर्माण न होता और हमारा भारत खण्डित न होकर अखण्ड भारत बना रहता।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी सराहनीय योगदान है। गांधी जी उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। शायद यह कथन मात्र रहा हो। बाद में स्वामी श्रद्धानन्द जी को देश व समाज के व्यापक हित में कांग्रेस से त्याग पत्र देना पड़ा था। जिन दिनों अंग्रेजों द्वारा रालेट एक्ट को लागू किया जा रहा था, देश भर में उसका विरोध हो रहा था। उन दिनों दिल्ली में रालेट एक्ट के विरोध में आन्दोलन का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी के मजबूत हाथों में था। रालेट एक्ट के विरोध में दिल्ली में एक दिन पूर्ण हड़ताल की गई। सारा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अदभ्र योद्धा और पुरोधा-स्वामी श्रद्धानन्द

ले.-श्री देव नारायण भारद्वाज 'वरेण्यम्' अवन्तिका (I) रामघाट मार्ग, अलीगढ़

'यथा नाम तथा गुण'-सुख व आनन्द की प्रतिमूर्ति परदादा सुखानन्द, निर्भय वीर ईश्वरभक्त पितामह गुलाब राय, और अगाध शिव भक्त पिता नानक चन्द के धर्मनिष्ठ परिवार में, ग्राम तलवन जिला जालन्धर पंजाब की पुण्य धरा पर, फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सं. 1913 वि. के पावन दिवस को जन्मे बालक का नाम मुन्शीराम प्रचलित हो गया था। ये अपने चार भाई और दो बहिनों में सबसे कनिष्ठ थे। इनके पिता जी अंग्रेज़ी शासन में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी थे; जिन्होंने लाहौर, हिसार, मेरठ, बरेली, बदायूँ, काशी, बाँदा, मिर्जापुर, मथुरा, खुर्जा आदि स्थानों में प्रतिष्ठापूर्वक शासन किया। मुन्शीराम की बाल्यावस्था एवं किशोरवय अपने पिता के साथ व्यतीत होती रही। इन्होंने बनारस के क्वीलन्स कॉलेज, (जय नारायण) कॉलेज और प्रयाग के म्योर कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की थी। वंश परम्परा के अनुसार इनमें धर्म कर्म एवं भक्ति का विशेष प्रभाव था। विश्वनाथ जी के दर्शन किये बिना ये जलपान तक नहीं करते थे। बाँदा में ये नियमित रामचरित मानस का पाठ सुनते थे, और प्रत्येक आदित्यवार को एक पैर पर खड़े होकर सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ करते थे। एक दिन इनके किशोर हृदय को ऐसी ठेस लगी, कि इनकी समस्त रूढ़ीवादी धार्मिक कट्टरता तिरोहित हो गई। हुआ यह कि ये काशी के विश्वनाथ के दर्शनार्थ गये तो इन्हें बाहर ही रोक दिया गया, क्योंकि मन्दिर में रीवाँ की महारानी दर्शन कर रही थी। इस प्रकार मूर्ति पूजा से इनको विरक्ति हो गई।

ऐसी ही पाखण्डपूर्ण अनेक घटनाओं के कारण मुन्शीराम के मन में उथल पुथल मच गई। पिता का अर्दली जोखू मिश्र रसोई में अपने लिए मांस पकाये तो कोई बात नहीं, किन्तु उसमें से कोई चिलम भरने के लिए आग ले लेता, तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाता। मन्दिर, गुफा, घाट में साधना करने वाले ढोंगी पुजारी साधुओं की वासना की शिकार युवतियों के चीखने पर इनको दौड़कर उन्हें बचाना पड़ा। बनारस में एक वेद पाठी पण्डित के घृणापूर्ण कुत्सित अनाचार को देखकर इन्हें संस्कृत भाषा और उसकी विद्या ही हेय लगने लगी। वे जायें तो जायें कहाँ? मुस्लिम मत के दुरित-दुराव से ये पूर्व से ही परिचित थे। इन्होंने ईसाई बनने की ठान ली। बपतिस्मा की तिथि तय करने के लिए पादरी के घर गये। उसका पर्दा हटाया तो वहाँ एक पादरी व नन को आपत्तिजनक दशा में देखकर उल्टे पाँव घर लौट आये। अब ये पूर्णरूपेण नास्तिक हो गये। यदा कदा मन्दिर चले जाते थे। मूर्तियों को प्रणाम भी कर लेते थे, किन्तु पण्डे-पुजारियों के आडम्बर-पाखण्ड की आलोचना करने से भी बाज नहीं आते थे। मुन्शी राम का मन पढ़ाई में कम प्रगल्भता में अधिक लगता था। अंग्रेज़ी उपन्यासों का पढ़ना, मदिरापान करना, शतरंज-ताश खेलना, वैश्याओं के नाच गाने-मुजरे में जाना और रईसजादों के साथ भाँति-भाँति के व्यंसनों में फंसे रहना-मुन्शीराम की नियमित दिनचर्या बन गई थी।

अभी मुन्शीराम की शिक्षा पूर्ण भी होने न पाई थी, कि इनका विवाह बारह वर्ष की बालिका शिव देवी से कर दिया गया। तरुण मुन्शी राम अंग्रेजी उपन्यासों की नायिकाओं के रूप में जो स्वप्न अपनी अर्द्धांगिनी के सम्बन्ध में संजोये थे, वे सब चकनाचूर हो गये। पर वे इनके जीवन की आधार व रक्षिका अवश्य सिद्ध हुई। दुर्व्यसनग्रस्त मदिरा से अचेत हुए मुन्शी राम को देर रात्रि में जब लड़खड़ाते हुए घर पहुँचाया जाता, तब शिव देवी ही इनको संभालती। इनकी उल्टी आदि के वस्त्र बदल कर गर्म दूध पिलाती और सुला देती। जब प्रात:काल को जगते तो यही उनकी सेवा करती हुई जागती मिलती। सं. 1936 वि. में स्वामी दयानन्द का बरेली आगमन हुआ। पिता को तो शान्ति व्यवस्था के नाते स्वामी जी के व्याख्यान सुनने का अवसर मिला जिससे वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने इनके न चाहने पर भी आग्रहपूर्वक मुन्शीराम को स्वामी जी के सत्संग में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। आदित्य मूर्ति दयानन्द के महान् व्यक्तित्व के दर्शन कर तथा सभा में पादरी स्काट व अन्य यूरोपियनों को बैठा देखकर इनके मन में श्रद्धा का उत्स प्रस्फुटित हो उठा। इन्होंने तीन अवसरों पर स्वामी जी के समक्ष ईश्वर के अस्तित्व पर शंका प्रकट की। उनका उत्तर सुनकर इन्हें मौन रहना पड़ा। पर इन्होंने कह दिया कि "महात्मन्! अपनी तर्कना शक्ति के कारण आपने मुझे निरूत्तर तो कर दिया; किन्तु विश्वास नहीं दिलाया कि ईश्वर भी कोई शक्ति होती है।" यह सुनकर स्वामी जी पहले हंसे फिर गम्भीर होकर कहा-"तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिए-यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारा विश्वास ईश्वर पर करा दूँगा। तुम्हें ईश्वर पर विश्वास तभी होगा, जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।"

बात आई गई हो गई। बरेली से आकर मुन्शीराम जालन्धर में मुख्तार का कार्य करने लगे। अंग्रेज़ों की चाकरी में उन्हें गुलामी की गन्ध लगती थी। सं. 1941 वि. में इन्होंने लाहौर जाकर वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने का निश्चय किया। विदाई उत्सव मनाते हुए मित्रों के साथ खूब मदिरापान किया। इसी रात्रि एक युवती को अपने मित्र के हाथों से छुड़ाकर उसके पतिव्रत धर्म की रक्षा की। उसी समय बिजली की भाँति इनकी आँखों में धर्म बहिन राजरानी, पत्नी शिव देवी की मूर्ति तथा कोपीनधारी यति दयानन्द की विशाल छवि विभूति रमाये हाथ में मोटा लट्ठ लिये आ खड़ी हुई। ऐसा लगा मानो वे कह रहे हों "क्या अब भी परमेश्वर पर तेरा विश्वास न होगा?" हृदय काँप उठा। उसी समय मदिरा से भरे गिलास और बोतल को दीवार पर पटक कर तोड़ दिया। लाहौर पहुंचने पर इनका सम्पर्क आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश से हो गया। मांस-मदिरा तथा सभी दुरित-दुर्व्यसनों से इन्हें मुक्ति मिल गई। जालन्धर में वकालत करते हुए सामाजिक कार्यों में सक्रिय हो गये। आर्य समाज जालन्धर के प्रधान बना दिये गये और उन्होंने यत्र तत्र भ्रमण कर वेद प्रचार करना आरम्भ कर दिया। आवश्यकतानुसार शास्त्रार्थों के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन कर सत्य धर्म दृढ़ किया। उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' तथा अन्य पत्र प्रकाशित कर वितरित किये।

अनेक आर्य समाजों को मिलाकर बनायी गयी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को स्थायित्व प्रदान किया। भरपूर युवावस्था में धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन के बाद भी दूसरा विवाह नहीं किया। सर्वप्रथम कन्या पाठशाला जालन्धर में खोली। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर की संचालन व्यवस्था में सहयोगी रहे, किन्तु वहाँ संस्कृत भाषा एवं आर्ष शास्त्रों की उपेक्षा को देखकर सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिए सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जिसके लिए न केवल अपनी कोठी बेच दी, प्रत्युत वांछित धनराशि का संग्रह निश्चित अवधि से पूर्व ही कर लिया, और अपने दोनों पुत्रों को भी गुरुकुल में ही रखकर पढ़ाया। दक्षिण अफ्रीका से मोहन दास गान्धी भारत आये और गुरुकुल में दर्शानार्थ गए, तो सर्वप्रथम आचार्य मुंशीराम ने ही उनको 'महात्मा' कहकर 'महात्मा गांधी' विश्व विश्रुत किया। गुरुकुल की 15 वर्ष तक सेवा करके भारत स्वातन्त्र्य युद्ध में योगदान हेतु दिल्ली आ गये। रौलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व करते समय गोलीबारी करने वाले सैनिकों के सामने अपनी छाती खोल कर हुंकार उठे "मैं खड़ा हूँ-गोली मारो" गोरखा सैनिकों की उठी हुई संगीनें नीचे झुक गईं। अब तक मुन्शीराम महात्मा के सम्बोधन के बाद संन्यासी श्रद्धानन्द बन चुके थे। दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से 30 हज़ार मुस्लिम भाइयों को सम्बोधत करने के लिए स्वामी जी को बुलाया गया। अकालियों के न्यायपूर्व आन्दोलन में सहायक बने और जेल यातना सहन की। इन्हें अकाल तख्त पर ससम्मान उपदेश देने हेतु आमन्त्रित किया गया।

भारत माता की स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय एकता और वैदिक संस्कृति की समरसता के प्रसारार्थ स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस के आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जलियाँवाला बाग के क्रूरतम हत्याकाण्ड के बाद पंजाब में कांग्रेस महाधिवेशन आयोजित करना भला किसके बूते की बात थी। स्वामी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ऋग्वेद में विज्ञान-भाग-2

ले.-शिवनारायण उपाध्याय दादावाड़ी कोटा, (राजस्थान)

(गतांक से आगे)

ऋग्वेद मण्डल। सूक्त 34 में 12 मन्त्र है, इनमें से 10 मंत्रों में अग्नि और जल के सम्प्रयोग से उत्पन्न वाष्प के यानों को चलाने का वर्णन हुआ है। पाठकों के लिए हम इनमें से 5 मन्त्र दे रहे हैं।

त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां याम उत रातिरश्विना।
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायं सेन्या भवतं मनीषिभिः।। ऋ. 1.34.1

पदार्थ-हे परस्पर उपकारक और मित्र (अभ्यायं सेन्या) साक्षात् कार्य सिद्धि के लिए मिले हुए (नवेदसा) सब विद्याओं को जानने वाले (अश्विना) अपने प्रकाश से व्याप्त सूर्य-चन्द्रमा के समान सब विद्याओं में व्यापी कारीगर लोगों आप (मनीषिभिः) सब विद्वानों के साथ (हिम्या इव) शीत कालीन रात्रियों के समान (नः) हम लोगों के (अद्य) इस वर्तमान दिवस में शिल्प कार्य के साधक (भवतम) हूजिए, (हि) जिस कारण (युवोः) आपके सकाश से (यंत्रम्) कला यंत्र को सिद्ध कर यान समूह को चलाया करें जिससे (नः) हम लोगों को (वाससः) रात्रि, दिन के बीच (रातिः) वेगादि गुणों से दूर देश को प्राप्त होवे (उत) और (वाम्) आपके सकाश से (विभुः) सब मार्ग में चलने वाला (यामः) रथ प्राप्त हुआ हम लोगों को देशानन्तर को सुख से (त्रिः) तीन बार पहुंचाये इसलिए ही हम लोग आपका संग करते हैं।

भावार्थ-इस मंत्र में उपमालंकार है। साक्षात् कार्य सिद्धि के लिए मिले हुए सब विद्याओं के विद्वान् कारीगर लोगों से प्रार्थना की गई है कि वे शिल्प कार्य में नवीन शिल्पियों के साथ कार्य करें जिससे उनकी सहायता और ज्ञान से कला यंत्र को सिद्ध कर यान समूह को चलाया करें जिससे लोग शीघ्रता से दूर देशों में पहुँच सकें तथा मार्ग में भी किसी कठिनाई का सामना न करना पड़े। यान समूह, द्वारा दूसरे देशों से व्यापार बढ़ा कर देश को आर्थिक दृष्टि से विसरित किया जा सके।

दूसरे मंत्र में यानों की बनावट के विषय में कहा गया है-

त्रयः यवसो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा।। ऋ. 1.34.2

पदार्थ-हे (अश्वि) अर्थात् वायु और बिजली के समान सम्पूर्ण शिल्प विद्याओं को यथावत् जानने वाले विद्वान् लोगों। आप (मधु वाहने) मधुर गुण युक्त द्रव्यों की प्राप्ति होने के हेतु (रथे) विमान में (त्रयः) तीन (पवयः) वज्र के समान कला घूमने के चक्र और (त्रयः) तीन (स्कम्भासः) तीन बंधन के लिए खंभ (स्कभितासः) स्थापित और धारण किये जाते हैं उसमें स्थित अग्नि और जल के समान कार्य सिद्ध करके (त्रिः) तीन बार (नक्तम्) रात्रि और (त्रिः) तीन बार (दिवा) दिन में इच्छा किये हुए स्थान को (उपयाथः) पहुंचो वहां भी आपके बिना कार्य सिद्धि कदापि नहीं होती। मनुष्य लोग जिसमें बैठ कर (सोमस्यः) ऐश्वर्य की (वेनां) प्राप्ति को करती हुई कामना का चन्द्र लोक की कान्ति को प्राप्त होते और जिसके (आरम्भे) आरम्भ करने योग्य गमनागमन व्यवहार में (विश्वे) सब विद्वान् (उत्) ही (विदुः) जानते हैं उस (उ) अदभुत रथ को ठीक-ठीक सिद्ध कर अभीष्ट स्थानों में शीघ्र जाया-आया करें।

भावार्थ-इस मंत्र में यान की बनावट के विषय पर वर्णन हुआ है। समुद्र, भूमि और अन्तरिक्ष में यात्रा करने वाले मनुष्यों के लिए आवश्यक है कि वे तीन-तीन चक्र युक्त अग्नि के घर और तीन बन्धन हेतु स्तम्भ युक्त यान की रचना करें। ऐसे यान में बैठे कर एक दिन-रात में इच्छा किये हुए स्थान पर तीन-तीन वार जाने में समर्थ हों। इस यान को इस प्रकार से बनावें कि उसमें अग्नि और जल का सम्प्रयोग कर वाष्प उत्पन्न कर उससे यान को चलाया जाये।

इस प्रकार के यान के अभाव में दूरस्थ देशों को जाकर व्यापार आदि कर अर्थ कमाना संभव नहीं है।

समाने अहन्द्विरवद्य ग्रहोना त्रिरद्य यज्ञं मधुनामिमिक्षतं।
त्रिर्वाजतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्।। ऋ. 1.34.3

पदार्थ-(अश्विना) अग्नि और जल के समप्रयोग से चलने वाले यानों को सिद्ध करके प्रेरणा करने और चलाने तथा (अवद्यगोहना) निन्दित दुष्ट कर्मों को दूर करने वाले विद्वान् मनुष्यों (युवम्) तुम दोनों (समाने) एक (अहन्) दिन में (मधुना) जल से (यज्ञम्) ग्रहण करने योग्य शिल्पादि विद्या सिद्ध करने वाले यज्ञ को (त्रिः) तीन वार (मियिक्षितम्) सींचने की इच्छा करो और (अद्य) आज (अस्मभ्यम्) शिल्प क्रियाओं को सिद्ध करने कराने वाले हम लोगों के लिए (दोषाः) रात्रियों और (उषसः) प्रकाश को प्राप्त हुए दिनों में (त्रिः) तीन वार यानों का (पिन्वतम्) सेवन करो और (वाजवतीः) उत्तम उत्तम सुखदायक (इषः) इच्छा सिद्धि करने वाले नौकादि यानों को (त्रिः) तीन वार (पिन्वतम्) प्रीति से सेवन करो।

भावार्थ-इस मंत्र में भी शिल्पी लोगों से प्रार्थना की गई है कि वे ऐसे यानों की रचना करें जिनमें बैठ कर लोग अपने गन्तव्य स्थानों पर एक दिन में तीन वार तक पहुंच सकें।

कत्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य वृक १ त्रयो बन्धुरो से सनीलाः।
कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः।।
ऋ. 1.34.2

पदार्थ-हे (नासत्या) सत्य गुण और स्वभाव वाले कारीगर लोगों तुम दोनों (यज्ञम्) दिव्य गुण युक्त विमान से आने-जाने योग्य मार्ग को (कदा) कब (उपयाथाः) शीघ्र जैसे निकट पहुंच जावें वैसे पहुंचाते हो और (येन) जिससे पहुंचते हो उस (रासभस्य) शब्द करने वाले (वाजिनः) प्रशंसनीय वेग से युक्त (त्रिवृतः) रचन, चालन आदि सामग्री से पूर्ण (रथस्य) और भूमि, जल अन्तरिक्ष मार्ग में रमण करने वाले विमान में (क) कहां (त्री) तीन (चक्रा) चक्र रचने चाहिये और इस विमान आदि यान में (वे) जो (सनीडाः) बराबर बन्धनों के स्थान वा अग्नि रहने का घर (बन्धुरः) नियम पूर्वक चलाने के हेतु कोष्ठ होते हैं उनका (योगः) योग (क) कहां रहना चाहिए ये तीन प्रश्न हैं।

भावार्थ-इस मंत्र में कहे गए तीन प्रश्नों के उत्तर जानने चाहिए। ऐश्वर्यवान् होने की इच्छा करने वाले पुरूषों को उचित है कि रथ के आदि, मध्य और अन्त में सब कलाओं के बन्धों के आधार के लिए तीन बन्धन विशेष सम्पादन करें तथा तीन कला घूमने घुमाने के लिए सम्पादन करें, एक मनुष्यों के बैठने के लिए, दूसरी अग्नि की स्थिति और तीसरी जल की स्थिति के लिए करके जब-जब चलने की इच्छा करें तब-तब यथा योग्य जल काष्ठों की स्थापना, अग्नि को युक्त और कला के वायु से प्रदीप्त करके वाष्प के वेग से चलाये हुए यान से शीघ्र गन्त व्यस्थान पर पहुंचे।

आ नो अश्विना त्रिवृत्ता रथेनार्वाञ्चं रयिं बहतं सुवीरम्।
श्रृण्वन्ता वामवसे जोह वीमि वृधे नो भवतं वाजसातौ।।
ऋ. 1.34.12

पदार्थ-हे चतुर कारीगरों। (श्रृण्वन्ता) श्रवण करने वाले (अश्विना) दृढ़ क्रिया बल युक्त आप दोनों जल और पवन के समान (त्रिवृता) तीन अर्थात् स्थल जल और अन्तरिक्ष में पूर्ण गति से जाने के लिए वर्तमान (रथेन) विमान आदि यान से (नः) हम लोगों को (अर्वाञ्चम्) ऊपर से नीचे अभीष्ट स्थान को प्राप्त होने वाले (सुवीरम्) उत्तम और वीर युक्त (रथिम्) चक्रवर्ती राज्य से सिद्ध हुए धन को (आवहतम्) अच्चे प्रकार प्राप्त होकर पहुंचाइये (च) और (नः) हम लोगों के (वाजसातौ) संग्राम में (वृधे) वृद्धि के अर्थ विजय को प्राप्त कराने वाले (भवतम्) कीजिए। जैसे मैं (अवसे) रक्षादि के लिए तुम्हारा (जोहवीमि) वारंवार ग्रहण करता हूँ वैसे आप मुझे ग्रहण कीजिए।

भावार्थ-जल और अग्नि से प्रयुक्त किये हुए रथ के बिना कोई मनुष्य स्थल, जल और अन्तरिक्ष मार्गों से जाने-आने में समर्थ नहीं हो सकता है। इस कारण इस विद्या में मनुष्य सदैव युक्त रहें। इस प्रकार के वर्णन से विदित होता है कि वैदिक विद्वान् यान बनाना जानते थे।

पृष्ठ 4 का शेष-सुख-''ईश्वर, वेद और ऋषि दयानन्द...

बाजार व व्यवसायिक प्रतिष्ठान बन्द थे। दिल्ली में एक विशाल जलूस निकाला गया था जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। यह जलूस चांदनी चौक में लालकिले की ओर बढ़ रहा था। तभी अंग्रेजों के गोरखा सैनिक सामने आये और स्वामी श्रद्धानन्द जी को आगे बढ़ने से रोक दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी भीड़ चीर कर सैनिकों के सामने आये तो सैनिकों ने अपनी बन्दूकों की संगीने स्वामी श्रद्धांनन्द जी की छाती पर तान दी। निर्भीक स्वामी जी ने अपनी छाती खोली और दहाड़ लगा कर उन सैनिकों को कहा था ''हिम्मत है तो मेरी छाती पर गोली चलाओ।'' तभी वहां एक अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर आ पहुंचा। उसने सैनिकों को बन्दूकें नीचे कर लेने को कहा। इससे एक बहुत बड़ी दुर्घटना होते होते टल गई।

इस घटना ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को दिल्ली का बेताज बादशाह बना दिया था। उनके इस शौर्य और देश पर बलिदान होने की साहसिक भावना से प्रभावित होकर जामा मस्जिद के इमाम ने उन्हें मुस्लिम धार्मिक लोगों को सम्बोधित करने के लिये आमंत्रित किया था। स्वामी जी जामा मस्जिद पहुंचे थे और उसके मिम्बर से उन्होंने वेदमन्त्र 'ओ३म् त्वं हि न: पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नीमहे।।' का पाठ करते हुए मुस्लिम बन्धुओं को सम्बोधित किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि हम शब्द में 'ह' और 'म' दो अक्षर हैं। ह का अर्थ हिन्दू और म का अर्थ मुसलमान है। सभी ने उनकी इस ऊहापूर्ण बात को पसन्द किया था। स्वामी जी पहले व अन्तिम गैर मुस्लिम व्यक्ति थे जिन्हें जामा मस्जिद के मिम्बर से मुसलमानों को धार्मिक उपदेश देने का अवसर मिला। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये अनेक प्रकार से योगदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान भी रहे। उन्हीं के कार्यकाल में सन् 1925 में मथुरा में ऋषि दयानन्द के जन्म की शताब्दी मनाई गई थी। इस कार्यक्रम में लाखों लोग आये थे। व्यवस्था की दृष्टि से यह आयोजन अति सफल रहा था। इस अवसर पर प्रमुख आर्य प्रकाशक श्री गोविन्दराम जी ने सत्यार्थप्रकाश का एक सस्ता संस्करण प्रकाशित किया था। यह जन्म-शताब्दी समारोह महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृतत्व में आयोजित किया गया था। इसके बाद शायद ऐसा कार्यक्रम आर्यसमाज के इतिहास में नहीं हुआ। आज आर्यसमाज में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा नारायण स्वामी जैसा कोई नेता नहीं है। आर्यों में वह भावनायें भी नहीं हैं जो उन दिनों के आर्यों में देखने को मिलती थी।

दिनांक 23 दिसम्बर, 1926 को रुग्ण अवस्था में एक मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने स्वामी जी के दिल्ली स्थित निवास पर पहुंच कर धोखे से उन्हें कई गोलियां मारकर शहीद कर दिया। मनुष्य मर सकता है परन्तु सत्य नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी आज भी हमारे दिल में जीवित हैं। आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनुकरण करना चाहिये। स्वामी जी को हमारा नमन हैं। हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

वर्ष 2021 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2021 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य छह रुपये प्रति तथा 600 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रात: 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

पृष्ठ 5 का शेष-सुख-अदभ्र योद्धा और पुरोधा...

जी ने साहसपूर्वक न केवल स्वागताध्यक्ष के दायित्व को वहन कर इसे सफल बनाया, प्रत्युत प्रथम बार हिन्दी में स्वागत-भाषण देकर नया इतिहास रचने का कीर्तिमान स्थापित कर दिया। भारत भूमि के स्थायी कल्याण के कटिबद्ध स्वामी जी देश में दलित भाइयों की दीन दशा के प्रति चिन्तातुर रहने लगे। उन्होंने इनके उद्धार के लिए प्रस्ताव कांग्रेस अधिवेशनों में रखे। इनकी इस गुहार की अनवरत उपेक्षा हुई, तो उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और दलितोद्धार सभा के माध्यम से दलितों की कठिनाइयों के निवारण का एक सफल अभियान आरम्भ किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने न केवल उत्तर भारत में ही, अपितु दक्षिण भारत के आन्ध्र प्रदेश, विजयबाड़ा, मैसूर, चेन्नई और मुम्बई आदि की यात्रायें करके इस दलितोद्धार के अभियान को संचालित किया। स्वामी जी ने अनुभव किया कि देशोद्धार हेतु बृहत् हिन्दू समाज को संगठित किया जाना आवश्यक है। इसीलिये उन्होंने आर्य समाज के साथ-साथ हिन्दू महासभा के माध्यम से हिन्दू धर्म से अन्य मतों में चले गये। इच्छुक व्यक्तियों के स्वधर्म में परावर्तन पर बल दिया। उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिले। सन् 1924 में शुद्धि सभा के द्वारा तीस हज़ार नव मुस्लिम मलकाने राजपूतों को गायत्री मन्त्र उच्चारण करके उनके पुरातन वैदिक धर्म का श्रेयस उन्हें प्रदान किया था। स्वामी श्रद्धानन्द हम (हिन्दू+मुस्लिम) के हमराही तो थे, किन्तु अनावश्यक तुष्टीकरण के विरुद्ध थे।

बिछुड़े भाइयों की घर-वापसी व पुनर्मिलन का कार्य रंग ला रहा था, किन्तु किसी प्रलोभन एवं दबाव से नहीं। वस्तुत: स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल दिया करते थे। इसीलिये उन्होंने कांग्रेस के गोहाटी महाधिवेशन में, निमोनिया की उग्र दशा के कारण वे वहाँ पहुँच तो नहीं सके; किन्तु अपना सन्देश भेजकर यही कहा था कि ''भारत का भावी सुख हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आश्रित है।'' इसके विपरीत जिनको स्वामी जी ने महात्मा कहा, जिसका अनुमोदन विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने किया था, वे ही गान्धी जी इन दिनों 'यंग इण्डिया' पत्र में कुरान व इस्लाम की खूब-प्रशंसा करते थे और 'सत्यार्थ प्रकाश' व उसके मानने वालों के लिये तिरस्कार सूचक शब्दों का प्रयोग किया करते थे, जबकि इसे पढ़कर मुस्लिम बुद्धिजीवी मौलाना-इमान आदि वेदानुयायी बन रहे थे। स्वामी जी के बढ़ते वर्चस्व को न सहन कर गान्धी जी उनके विषय में पक्षपातपूर्ण आलोचनायें करने लगे थे, जिससे देश के गतिशील वातावरण में विषैला धुआँ फैलने लगा था, जो धर्मान्ध-मतान्ध लोगों को स्वामी श्रद्धानन्द के विरुद्ध भड़काने के लिये पर्याप्त था। तर्क-बुद्धि, सिद्धान्त एवं व्यवहार से स्वामी जी के बढ़ते अभियान का रोकना तो राष्ट्र द्रोहियों के वश की बात न थी, इसलिये इन लोगों ने उनकी हत्या का षड्यन्त्र रच दिया।

शुद्धि के बहाने स्वामी जी से मिलने आये अब्दुल रशीद को सेवक ने उनके रुग्ण होने के कारण मिलाने से मना कर दिया। आग्रहवश स्वामी जी ने उसे अपने पास बुला लिया। आगन्तुक ने पानी मांग कर सेवक को पृथक कर दिया, और उस कायर नराधम नर पशु ने रोग शैय्या पर रुग्णावस्था में ही 23 दिसम्बर 1926 को तमञ्चे से गोली मार कर स्वामी जी की हत्या कर दी। सेवक-शिष्यों ने उसे दबोच लिया। स्वामी जी के इस बलिदान से दिल्ली व देशभर में हाहाकार मच गया। सम्पूर्ण देश इस शोक सागर में डूब रहा था, और भारत माता के अश्रुओं की सरितायें उसमें मिलती जा रही थीं। अब गान्धी जी भी उन्हें 'अनाथ बन्धु एवं दलित-प्रेमी' के रूप में याद कर रहे थे। इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री रैम्जे मेकडोनल्ड ने गुरुकुल में कभी स्वामी जी के दर्शन किये थे और स्वदेश लौटने पर अपने हृदय के भाव व्यक्त करते हुए कहा था- ''आधुनिक चित्रकार यदि ईसा का चित्र बनाना चाहे, तो स्वामी श्रद्धानन्द को देख ले जो प्रभूत आदर के पात्र हैं।'' ऐसे महान् व्यक्तित्व के कृतित्व एवं वक्तृत्व को थोड़ी सी पंक्तियों में समेटना असम्भव है। आओ उस राष्ट्रोद्धार के अविचल योद्धा और वैदिक संस्कृति शिक्षा के विमल पुरोधा-स्वामी श्रद्धानन्द को हार्दिक, श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर इस लेखनी को उस देव के प्रति नत कर दें।

आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर का 91वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर का 91वां वार्षिकोत्सव दिनांक 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर 2020 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी पवित्र वेदमंत्रों के साथ आहुतियां प्रदान करते हुये। जबकि चित्र दो में आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी, श्रीमती गुलशन शर्मा जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रवचन सुनते हुये। चित्र तीन में श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी एवं आर्य समाज के सदस्य।

आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर का 91वां वार्षिकोत्सव दिनांक 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर 2020 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 30 नवम्बर से 5 दिसम्बर 2020 तक प्रात: 7.30 बजे से 9 बजे तक हवन यज्ञ एवं भजन इत्यादि का कार्यक्रम होता रहा। 6 दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुर्दशन शर्मा जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी उपस्थित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित सत्यप्रकाश शास्त्री, पंडित बुद्धदेव वेदालंकार एवं पंडित आनन्द प्रकाश जी ने वेद मंत्रों के उच्चारण से हवन यज्ञ कराया। इस अवसर पर आमंत्रित विद्वान आचार्य सुन्दर लाल शास्त्री जी का प्रवचन हुआ। उन्होंने बड़े धार्मिक और जीवनोपयोगी बातों का उल्लेख किया। उन्होंने सत और असत के विषय में बताया कि आजकल हम लोग सत को छोड़ कर असत के पीछे भाग रहे हैं। अपना जीवन आदर्श होना चाहिये। निर्मल होना चाहिये। तभी चित्त की वृत्ति को रोक पाएंगे। अपने चंचल मन को अपने वश में रख पायेंगे। हमें हर दिन उस परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये धियो यो न: प्रचोदयात्। हमें सुमति दो। उत्तम बुद्धि दो। परमात्मा ने हमें बुद्धि तो दी है पर सुमति नहीं है। वह हमें प्राप्त करनी होगी। जो बुद्धि हमें मिली है उसका हमें प्रयोग करना नहीं आता। उन्होंने कहा कि बुद्धि शुद्ध तब होगी जब आप सत्संग में जाएंगे। स्वाध्याय करेंगे, जप तप करेंगे तब हमारी बुद्धि शुद्ध होगी। आचार्य जी ने कहा कि अपने जीवन को निर्मल और आदर्श बनाना है तो सतगुरु ढूंढो, गुरु तो बहुत मिल जाएंगे पर सतगुरु नहीं मिलता है। स्वामी दयानन्द जी के कई गुरु थे पर सतगुरु एक श्री विरजानन्द जी थे। सोना और पीतल को समझने की बुद्धि होनी चाहिये। नहीं तो सब बेकार है। इसके बाद श्री जोगेन्द्र भंडारी जी ने आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई और आर्य समाज के आय-व्यय का सम्पूर्ण लेखा जोखा बताया।

आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने मुख्यातिथि श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी को सम्मानित किया। इसके साथ ही डी.ए.वी. से आए हुये प्रिंसीपल एवं अध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। इसके बाद अमृतसर से पधारे श्री दिनेश पथिक जी के मधुर भजन हुये जिनको आए हुये आर्यजनों ने बहुत पसन्द किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने आए हुये सभी आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कोरोना की इस विषम परिस्थिति में भी हम लोग एकत्र होकर परमात्मा का सबसे अच्छा कर्म कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना जैसी महामारी से बचने के लिये इससे अच्छा उपाय और कोई नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि इस समय हम महामारी की समस्या से जूझ रहे है। इस महामारी से तभी बचा जा सकता है जब हम अपनी भारतीय संस्कृति के अनुसार आचरण करेंगे। अपना खान-पान सात्विक करेंगे, योग प्राणायाम के द्वारा अपने इम्युनिटी सिस्टम को ठीक रखेंगे। अपने खान-पान का और रहन-सहन का पूरा ध्यान रखें। उन्होंने कहा कि वेद प्रचार आर्य समाज का मेरू दण्ड है। यही आधारशिला है जिस पर हमारा संगठन आधारित है। आर्य समाज एक वैचारिक संगठन है। अन्य मत-मतान्तरों की तरह इसमें पाखण्ड, अन्धविश्वास को बढ़ावा नहीं दिया जाता, लोगों को अन्धश्रद्धा के नाम पर किसी बात को मानने पर विवश नहीं किया जाता अपितु स्वाध्याय, चिन्तन और मनन करते हुए उसे मानने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसलिए आर्य समाज की उन्नति तब तक सम्भव नहीं है, जब तक उसके अनुयायी स्वाध्याय को अपने जीवन का आवश्यक अंग नहीं बनाएंगे। इसलिए आर्य समाज से जुड़े हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह प्रतिदिन समय निकाल कर स्वाध्याय अवश्य करें। इसके बाद भजन सम्राट श्री सुरेन्द्र गुलशन जी के सुमधुर भजन हुये। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई ने वार्षिकोत्सव के विषय में संक्षेप में कहा कि इन सात दिनों में हमने जो ज्ञान लिया है उसे अपने जीवन में धारण करेंगे तो ही कार्यक्रम का, यह उत्सव करने का सार्थक फल मिलेगा। उन्होंने कहा कि पहले लोगों का ध्येय होता था कि धर्म में आनन्द है पर आज से आनन्द में धर्म है। हम सबको आनन्दित करके आनन्दित हो रहे हैं। इस कार्यक्रम में आए महानुभावों व धर्म प्रेमी सज्जनों में श्रीमती रीटा शर्मा, प्रिं. विनोद चुघ, प्रिंसीपल निमित शर्मा, प्रिं. सोनाली शर्मा, प्रिं. अमित नागपाल, श्री ओ.पी. महाजन, डा. ऋषि आर्य, डा. रीमा आर्य, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, प्रो.प्रदीप भंडारी, अजय गोस्वामी, संगीता भंडारी, एस.पी. सहदेव, सुदेश भंडारी, राज किरण अरोड़ा, डा. रवि महेन्द्रु, डा. अंजलि महेन्द्रु, डा. निधि मल्होत्रा, डा. डिम्पल मल्होत्रा, बलदेव मेहता, शशि मेहता, डा. संगीता पुरी, रजनी सेठी, हिन्दपाल सेठी, ज्योति सम्मी, एडवोकेट ओम गंगोत्रा, राज कुमार आर्य, श्रीमती प्रवीण कालिया आदि उपस्थित थे।

-अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। इस महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। चीन से प्रारम्भ हुआ यह वायरस धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल गया। इस वायरस के कारण जहाँ सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित हुई हैं वहीं पर लोग अपने ही घरों में कैद हो गए। इस महामारी के कारण आर्य समाजों में प्रचार-प्रसार के कार्य में भी रूकावट आई। अब जबकि इस महामारी का प्रकोप धीरे धीरे कम हुआ है इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वह अपनी अपनी आर्य समाज की गतिविधियों को स्वास्थ्य मंत्रालय की गाईड लाईन के अनुसार चलाने का कार्य करें ताकि आर्य समाज में प्रचार प्रसार का कार्य चलता रहे। आशा है आप सभी महानुभाव आर्य समाज की गतिविधियों को चलाने का प्रयास करेंगे।

भवदीय,

प्रेम भारद्वाज
महामंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावदाप: सिष्यदु: यावदग्नि:।
ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महांस्तस्मै काम नम इत् कृणोमि।।
-अथर्व० ९.२.२०

भावार्थ-परमेश्वर सूर्य, पृथिवी आदि पदार्थों का उत्पन्न करने वाला और जानने वाला है। आकाशादि सबसे बड़ा है। उसी को हम प्रणाम करें और उसी की उपासना करें।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**